UGC Approved Journal No - 47299
Volume VII Issue 2 June, 2017 ISSN 2249-8907

Vaichariki

A Multidisciplinary Refereed International Research Journal

Chief Editor:
Dr. Manoj Kumar

CONTENTS

- **Triple Talaq : Human Rights Perspective of Protection of Rights of Muslim Women** 1-4
  Vinita Kacher, Assistant Professor, Faculty of Law University of Lucknow
- **Child Trafficking in India : A Major Concern** 5-9
  Anil Kumar, Research Scholar, Faculty of Law, Banaras Hindu University, Varanasi
- **Women empowerment through Self Help Groups** 10-12
  Pratyushi Saikia Tandon, Research Scholar, Department of Sociology, Banaras Hindu University, Varanasi
- **The Tale of Unmarried Mughal Daughters** 13-16
  Sugandha Rawat, Research Scholar, Mewar University Chittorgarh (Raj.)
- **Chalcolithic Culture of Bihar** 17-20
  Yogendra Kumar, Research Scholar, Magadh University, Department of Ancient Indian and Asian Studies
- **Inclusive Education : Including the Excluded** 21-24
  Salvi Singh, Research Scholar, Faculty of Education, BHU, Varanasi
- **Prostitution in Vedic Society** 25-27
  Rajani Kumari, Research Scholar, Department of History, Magadh University
- **Notes On *Najat-ur Rashid*: Nature and Historical Context** 28-32
  Ikramul Haque, PhD Research Scholar, CHS, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- **Response of Chlorophyll and Nutrients Concentration in Leaves of Cape Gooseberry (*Physalis peruviana* L.) To Integrated Nutrient Management** 33-36
  Akhilendra Verma, Department of Horticulture, Institute of Agricultural Sciences, Banaras Hindu University, Varanasi- 221 005 (U.P.)
  S. P. Singh, Department of Horticulture, Institute of Agricultural Sciences, Banaras Hindu University, Varanasi- 221 005 (U.P.)
  V. K. Singh, Krishi Vigyan Kendra
  Bijendra Kumar Singh, Department of Horticulture, Institute of Agricultural Sciences, Banaras Hindu University, Varanasi- 221 005 (U.P.)
- **Domestic Violence Against the Female Fork of The Country** 37-41
  Akshaya Shukla (Adv), Research Scholar and Guest Faculty at Law Faculty, Jai Narain Vyas University, Jodhpur (Raj)
- **A Study on Ecolabel Awareness Among Indian Consumers** 42-45
  Rachana Bharti, Department of Home Science, R. Ambedkar Bihar University, Muzaffarpur, India
  Dr. Babita Kumari, Department of Home Science, BPS College Desari, Vaishali, India

- राजा राममोहन राय का सामाजिक चिन्तन
  डॉ. अर्चना पाठक, एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, बी.एन.के.बी.पी.जी. कालेज, अकबरपुर अम्बेडकरनगर — 313-317
- भारत में नगरीकरण की बढती प्रवृत्ति एवं चुनौतियां
  डॉ. अनूप कुमार सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग डी.ए.वी. कालेज कानपुर — 318-322
- उपनिषद् में ब्रह्म विचार
  नीतू, शोध छात्रा, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी। — 323-324
- इलेक्ट्रानिक उपकरणों का संगीत जगत में योगदान
  ऋतिका त्रिपाठी, गायन विभाग, संगीत एवं मंच कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी — 325-326
- परास्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन
  डॉ. सुनीता त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, शिक्षा शास्त्र विभाग, के. बी. पी. जी. कालेज, मिर्जापुर — 327-333
- जल संसाधन की बढ़ती मॉग एवं घटती उपलब्धता
  अजीत कुमार, शोध छात्र (भूगोल विभाग), बी.आर.ए.बी.यू, मुजफ्फरपुर। — 334-338
- समावेशी शिक्षा : विकास एवं बाधाएं
  मीना कुमारी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर (स्पेशल एजुकेशन), गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़) — 339-342
- जल वर्षा में वनों की भूमिका एवं उनका पर्यावरण संतुलन में योगदान
  सुनील दत्त, शोधार्थी, भूगोल, छत्रपति साहू जी महराज विश्वविद्यालय, कानपुर — 343-344
- गणपति उपासना के पुरातात्त्विक आधार
  कुँवर धनंजय विक्रम सिंह, शोध छात्र, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी — 345-348
- **The Theme of Love and Death in The Lyrical Poetry of William Shakespeare**
  Abdul Hannan Khan, Research Scholar, B R A Bihar University, Muzaffarpur — 349-352
- **Exploring the World of Nature**
  Bodiuzzaman Bhuyan, Research Scholar, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur — 353-358
- **Feminist Sensibility in Shashi Deshpande's Novel, The Dark Holds No Terrors.**
  Dewan Khairul Alom, Research Scholar, B R A Bihar University, Muzaffarpur — 359-363
- **Narrative Art in the Writing of Anita Desai**
  Gaur Krishna Paul, Research Scholar, B R A Bihar University, Muzaffarpur — 364-367
- **Indian Ideas and Attitude in R.K. Narayan's English Writing**
  Hiranya Jyoti Borah, Research Scholar, B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur — 368-372
- **Human Right of Prisoners-Legal Desire**
  Dr. Umesh Narain Sharma, Head, Department of Law, Nehru Gram Bharati Vishwavidyalaya, Allahabad — 373-377

समावेशी शिक्षा : विकास एवं बाधाएं

मीना कुमारी *

आज संसार के सभी देश शिक्षा के अधिकार को मात्र एक सिद्धान्त से व्यावहारिक रुप में बदलने के लिये समावेशी शिक्षा को सबसे उपयुक्त शिक्षा प्रणाली मानते है। **डाकर विश्व शिक्षा फोर्म** (Dakar World Education Forum, April, 2000) ने 'सभी के लिये शिक्षा' अभियान को सफल बनाने के लिये समावेशी शिक्षा को अत्यंत महत्वपूर्ण प्रयास माना है।

समावेशी शिक्षा में समाज के उन समूहों पर विशेष रुप से ध्यान केन्द्रित किया जाता है जो अब तक शिक्षा से वंचित रहे हैं। इन समूहों में निर्धनता में पल रहे, जाति व भाषा की दृष्टि से अल्पसंख्यक, दूरवर्ती, अविकसित तथा पिछड़े क्षेत्रों व समुदायों के बच्चे, बालिकाएँ तथा ऐसे बच्चे जो शारीरिक अथवा मानसिक रुप से अशक्त हैं और जिन्हें विशिष्ट शिक्षा प्रावधानों की विशेष आवश्यकता है तथा यह वे बच्चे हैं जिन्हें शिक्षा व सामान्यतः समाज में अत्यंत सीमांत स्तर पर रखा जाता है।

समावेशी शिक्षा सभी बालकों की शिक्षा तथा विकास के लिये उपयुक्त प्रावधानों का समर्थन करती है। इस शिक्षा प्रणाली का आदर्श वाक्य 'शिक्षा तक पहुँच अर्थात् सफलता तक पहुँच' (Access to education is an access to success) की भावना को प्रकट करता है तथा इसकी उपयुक्तता का संदेश देता है। यह उक्ति शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति के क्रियात्मक पक्ष को एक अविरल सांत्यकता पर स्पष्ट करती है, जिसे योजनाबद्ध नीतियों के कई पूर्वनियोजित सोपानों के माध्यम से प्राप्त किया जायेगा।

शारीरिक रुप से बाधित बालकों की शिक्षा के प्रति सरकारी तथा गैरसरकारी संस्थाओं का भूतकाल तथा वर्तमान में समावेशी प्रयासों का अभाव रहा है तथा इस ओर कभी भी ध्यान नहीं दिया गया। समाज तथा सभ्यता के विकास में हुए परिवर्तन के कारण शारीरिक रुप से बाधित बालकों की शिक्षा के प्रति समाज की स्थिति तथा विशेषतः माता--पिता की स्थिति तथा व्यवहार में परिवर्तन हुआ। **प्रथम अवस्था** में तो अपंगों के साथ दुर्व्यवहार किया गया तथा उन पर कभी भी ध्यान नहीं दिया गया। उन्हें ईश्वर का अभिशाप तथा माता–पिता पर बोझ समझा गया। दूसरे चरण में बाधित बालको को माता पिता या अन्य का संरक्षण दिया गया। शारीरिक रुप से बाधितों के बारे में सामान्यतः ऐसा कहा जाता था कि अपंग पूर्णतः बेकार हैं, ये स्वयं कुछ भी करने में असमर्थ हैं, ये ऐसे जीव हैं जो कृपा के पात्र हैं तथा जब तक ये जीवित है तब तक इनकी देखभाल करनी होगी।

समावेशी शिक्षा का विकास (Rise of Inclusive Education) :

अमेरिका व यूरोप के अनेक शिक्षाविदों व चिकित्सकों की सहायता तथा प्रयासों से समावेशी शिक्षा को नया रुप मिला । वास्तव में समावेशी शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों में शिक्षाविदों व चिकित्सको के नये नये विचाररें के कारण स्थायित्व नहीं आ सका परंतु शारीरिक रुप से बाधित बालको के शिक्षा क्षेत्र में वास्तव में अद्भूत परिणाम प्राप्त हुए है। इन शिक्षाविदों, विशेषज्ञो की कार्यक्षमता प्रगतिशील हो गयी। निराशावादी विचारों के कारण मानवीय तथा प्रभावशाली उपचार प्रभावहीन संस्थाओं में परिवर्तित हो गये तथा आशाएं निराशा में बदल गई। समावेशी शिक्षा में गतिरोध के निम्नलिखित कारण थे–

1. अपंग बालकों के माता–पिताओं की आशाएं पर्याप्त रुप से बढ़ गई। वे शिक्षाविदों तथा अन्य विशेषज्ञों से बालकों के शिक्षण क्षेत्र में चमत्कारिक विकास की आशाएं करते थे।
2. कुछ क्षेत्रों में समावेशी शिक्षा देने वाले शिक्षा शास्त्री असफल रहे।
3. शिक्षण क्षेत्र में उपयुक्त विधियों को लेकर शिक्षाविदों में विवाद रहा, वे आपस में अपंग बालकों की शिक्षा में अपनायी जानी वाली विधियों पर सहमत नहीं हो पाये।
4. अधिक संख्या में अपंग बालकों की विशिष्ट शिक्षा के लिये साधनों की कमी थी।

---

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर (स्पेशल एजुकेशन), गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)